



मुक्तस्वाध्यायपीठम्
(Institute of Distance Education)
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय)

S-HIN-II-03

शास्त्री-हिन्दी-द्वितीय वर्ष-तृतीय पत्र

Shastri-Hindi-2nd Year-3rd Paper

खण्ड – ५ : हिन्दी व्याकरण एवं शब्द रचना

पाठ – १८ सन्धि	०५-२१
पाठ – १९ समास	२२-४०
पाठ – २० पर्यायवाची एवं विलोम शब्द	४१-५०
पाठ – २१ श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्द	५१-६९
पाठ – २२ अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	७०-७९
पाठ – २३ मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ	८०-११६

पाठ्यक्रम संयोजक

प्रो. शिशिर कुमार पाण्डेय

आधुनिक विषय संकायाध्यक्ष

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊपरिसर, उ.प्र.

समीक्षक

प्रो. हरिशंकर मिश्र, पूर्व आचार्य हिन्दी

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

पाठलेखक

पाठ – 44, 46 डॉ. राजेश कुमार शुक्ल

पाठ – 45, 47-48 डॉ. सुभाषचन्द्र

सम्पादक

डॉ. राजेश कुमार शुक्ल

श्री रङ्गलक्ष्मी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय,
वृन्दावन, उ.प्र.

डॉ. संजय कुमार मिश्र

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (मा.वि.),
रणवीरपरिसर, कोट-भलवल, जम्मू

प्रकाशक

निदेशक

मुक्तस्वाध्यायपीठम्

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

प्रथम मुद्रण – 2019

ISBN : 978-93-85182-35-8

© मुक्तस्वाध्यायपीठम्, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश मुक्तस्वाध्यायपीठम् की लिखित अनुमति बिना किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

प्रयुक्तकागद – Agro-based environment Friendly.

पृष्ठविन्यास

श्री मनमोहन दाधीच

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान,
जयपुर परिसर, जयपुर

दिनेश कुमार

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान,
नई दिल्ली

राजीव कुमार सिंह

राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान,
नई दिल्ली

मुद्रक

M/s ARIHANT OFFSET

212F & 229, Nangli Shankrawati Ind. Area, Nazafgarh Road,
New Delhi-110043

पाठ - 21

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्द

पाठ संरचना

- 21.1 उद्देश्य
- 21.2 प्रस्तावना
- 21.3 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' का अर्थ
बोध प्रश्न- 1
- 21.4 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों' के उदाहरण
बोध प्रश्न- 2
- 21.5 'अनेकार्थी शब्द' का तात्पर्य
बोध प्रश्न- 3
- 21.6 'अनेकार्थी शब्दों' के उदाहरण
बोध प्रश्न- 4
- 21.7 सारांश
- 21.8 शब्दावली
- 21.9 सन्दर्भ ग्रन्थ
- 21.10 पठनीय ग्रन्थ
- 21.11 बोधप्रश्नों के उत्तर
- 21.12 अभ्यास प्रश्न

21.1 उद्देश्य

प्रिय अध्येता! इस पाठ में 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्द' में आपका स्वागत है। पाठ को पढ़ने के बाद आप—

1. 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' का अर्थ जान जायेंगे।
2. पाठ में दिये गये उन शब्दों से अवगत हो जायेंगे जो लिखने, पढ़ने व सुनने में बहुत कम अन्तर लिये होते हैं।
3. हिन्दी के विभिन्न ग्रन्थों से श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों की सूची बना सकेंगे।
4. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का एक ही वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।
5. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के उन कारणों को जान जायेंगे जिनसे अर्थभ्रम की सम्भावना हो जाती है।
6. अनेकार्थी शब्दों का तात्पर्य जान जायेंगे।
7. अनेकार्थी शब्दों का काव्य में महत्व बता सकेंगे।
8. युक्त गद्य-पद्य रचनाओं से अनेकार्थी शब्दों को छाँट सकेंगे।

21.2 प्रस्तावना

संस्कृत में एक श्लोक है जिसका अर्थ यह है कि हे पुत्र! यद्यपि बहुत नहीं पढ़ते

हो तथापि व्याकरण पढो, (क्योंकि) 'स्वजन' 'श्वजन', 'सकल' 'शकल' सकृत शकृत न हो जाये-

यद्यपि बहु नाधीषे तथापि पठ पुत्र व्याकरणम्।

स्वजनः श्वजनो माभूत् सकलं शकलं सकृच्छकृतम्॥

यदि असावधानी से 'स्वजन' के बदले 'श्वजन' का उच्चारण कर दिया गया तो 'अपना जन' के बदले कुत्ताजन अर्थात् कुत्ता अर्थ हो जायेगा तथा 'सकल' के बदले 'शकल' कह दिया गया तो सम्पूर्ण का अर्थ न होकर खण्ड या टुकड़े का अर्थ द्योतित हो जायेगा। इसी प्रकार 'सकृत' के बदले 'शकृत' कह दिया जाय तो 'एक बार' अर्थ न व्यक्त होकर 'मैला' या 'विष्टा' का अर्थ द्योतित होगा।

इसी प्रकार हम किसी दुकानदार से कहते हैं कि 'दो गज पीला कपड़ा चाहिए' तो अर्थ का अनर्थ हो जायेगा, क्योंकि गज का अर्थ 'हाथी' होता है। माप को प्रकट करने वाला शब्द 'गज' होता है। 'गज' और 'गज़' के उच्चारण में इतना कम अन्तर होता है कि हम असावधानी वश दोनों शब्दों का उच्चारण एक जैसे कर देते हैं। इस पाठ में हम इन प्रकार के शब्दों का ज्ञान व अभ्यास करेंगे।

'अनेक शब्दों के लिए एक शब्द या 'वाक्यांशों के लिए एक शब्द' का अभ्यास कर लिया है। आशा है कि आप प्रस्तुत पाठ 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द, अनेकार्थी शब्द' चाव से पढ़ेंगे और ऐसे शब्दों का ज्ञान कर के अपनी भाषा को शुद्धता से युक्त करेंगे।

21.3 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' का अर्थ

'श्रुतिसम' का अर्थ है- 'सुनने में समान' और 'भिन्नार्थक शब्द' का अर्थ है 'भिन्न अर्थ वाला'। अतः 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' का अर्थ हुआ- 'सुनने में समान (किन्तु) भिन्न अर्थ वाले शब्द'। यहाँ यह सन्देह उत्पन्न होता है कि जो शब्द सुनने में समान होंगे वे लिखने में भी समान होंगे, जैसे - 'पानी'। 'पानी' शब्द लिखने व सुनने दोनों में समान हैं। अतः एक 'पानी' शब्द का जो अर्थ होगा वही अर्थ दूसरे 'पानी'-शब्द का भी होगा। फिर भिन्नार्थक क्यों कहा गया? यहाँ समाधान यह है कि 'श्रुति सम' का तात्पर्य है- 'सुनने में लगभग समान' अथवा 'सुनने में समान जैसे' अथवा सूक्ष्म अन्तर वाले न कि 'सुनने में एकदम समान'। कभी-कभी एक ही शब्द के अनेक अर्थ देखे जाते हैं। एक शब्द का अनेक अर्थ होना उसके प्रयोग पर निर्भर करता है। जैसे- 'हे भगवान्! हमारे पानी की रक्षा कीजिए।' इस वाक्य में पानी का अर्थ साधारण जल न होकर 'इज्जत' या 'सम्मान' से है। इस पाठ में शब्दों का भी अभ्यास करेंगे।

'आदि' और 'आदी' ये दो शब्द सुनने में लगभग समान हैं। ऐसे सुनने में बहुत कम अन्तर वाले शब्दों के भी भिन्न अर्थ होते हैं। इस उदाहरण में 'आदि' का अर्थ होगा- 'प्रारम्भ' और 'आदी' का अर्थ होगा 'अभ्यस्त'। इस प्रकार के शब्दों को 'समोच्चारित एवं समरूपी भिन्नार्थक शब्द' भी कहा जाता है। हम यह भी कह सकते हैं कि इन प्रकार के शब्दों के उच्चारण और वर्तनी में अल्प या सूक्ष्म अन्तर होता है।

इन प्रकार के शब्दों का अभ्यास करना बहुत ही आवश्यक है, क्योंकि थोड़ी सी भूल में अर्थ का अनर्थ हो सकता है। यदि हम कहें कि 'यह कपड़ा दो गज लम्बा' और 'यह गज़ बहुत बड़ा जानवर है' तो हँसी के पात्र होंगे। क्योंकि कपड़े की माप के लिए 'गज़' का प्रयोग होता है एवं हाथी के लिए 'गज' का प्रयोग होता है।

बोध प्रश्न -1

1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों का तात्पर्य क्या है?
2. जिस प्रकार 'श्रुतिसम' का अर्थ होगा सुनने में समान। सुनने में समान लगने वाला' उसी प्रकार 'वर्तनीसम और ध्वनिसम' का अर्थ क्या होगा ?

21.4 श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों के उदाहरण

1. अपमान – निरादर
उपमान – जिस वस्तु की उपमा दी जाए
2. अन्न – अनाज
अन्य – दूसरा
3. अपर – दूसरा
अपार – पार रहित, जिसका पार न पाया जा सके
4. अचार – आम, नींबू, आदि के टुकड़ों और विभिन्न मसालों के योग से बनाया गया नमक युक्त खाद्य पदार्थ
आचार – चाल-चलन, आचरण
5. अनल – आग
अनिल – वायु
6. अवलंब – सहारा
अविलम्ब – शीघ्र
7. अंदर – भीतर
अंतर – भेद, बीच में
8. अपेक्षा – बजाय, आशा
उपेक्षा – अनादर, तिरस्कार
9. अवधि – समय सीमा
अवधी – अवध की भाषा का नाम
10. अपकार – बुरा करना, बुराई, हानि करना
उपकार – भलाई करना, भलाई
11. अंस – कंधा
अंश – भाग, हिस्सा
12. अंक – गोद, संख्या
अंग – देह का भाग

13. अर्क – सूर्य
अरक – रस
14. अमल – स्वच्छ, आदत
अम्ल – तेजाब
15. अमूल्य – मूल्य रहित
अमूल – जड़ रहित
16. अतल – गहरा
अतुल – अनुपम
17. अक्ष – धुरी
अक्षि – आँख
18. अभिज्ञ – जानकार
अनभिज्ञ – अनजान
19. अम्ब – माता
अम्बु – जल
20. अपर – दूसरा
अपार – अत्यधिक, जिसका पार न हो
21. अलि – भ्रमर
आली – सखी
22. अंश – भाग
अंशु – किरण
23. अशक्त – निर्बल
आसक्त – मोहित, आसक्ति से युक्त
24. अविहित – जो उचित न हो
अभिहित – निर्दिष्ट
25. असन – भोजन
आसन – बैठने का साधन
26. अवरोध – रुकावट
अविरोध – बिना विरोध के
27. अहं – अहंकार, घमण्ड
अहम – महत्त्वपूर्ण
28. अर्जन – कमाई

	अर्चन	– पूजा, प्रार्थना
29.	अयस	– लोहा
	अयश	– बदनामी
30.	अवशेष	– बचा हुआ
	अविशेष	– साधारण
31.	आदि	– प्रारम्भ, शुरु
	आदी	– अभ्यस्त, आदत वाला
32.	आधी	– आधा भाग
	आँधी	– हवा का तेज चलना
33.	आय	– आमदनी
	आयु	– उम्र
34.	आयत	– वह चतुर्भुज जिसके आमने सामने की भुजाएँ बराबर होती हैं और प्रत्येक कोण समकोण होता है। रेखाकृति विशेष।
	आयात	– बाहर से माल मँगाना
35.	आभरण	– आभूषण
36.	उपयुक्त	– ठीक
	उपर्युक्त	– ऊपर कहा गया
37.	उदार	– कृपालु
	उधार	– ऋण
38.	उपयोग	– काम में लेना
	उपभोग	– भोगना
39.	ऋत	– सत्य
	ऋतु	– मौसम
40.	ओर	– तरफ
	और	– तथा, दूसरा
41.	कलि	– एक युग का नाम, कलियुग
	कली	– अध खिला फूल
42.	कर्म	– कार्य
	क्रम	– सिलसिला
43.	कपट	– धोखा, छल

	कपाट	– दरवाजा, किवाड़
44.	कल	– मशीन
	काल	– समय
45.	कच	– केश
	कुच	– उरोज (स्तन)
46.	काट	– काटना, कटा हुआ
	काठ	– लकड़ी
47.	कुल	– वंश, सम्पूर्ण
	कूल	– किनारा
48.	कोष	– खजाना
	कोश	– शब्द-भण्डार
49.	कोट	– किला
	कोटि	– करोड़
50.	कृपण	– कंजूस
	कृपाण	– तलवार
51.	कटिबन्ध	– फेंटा (कमरबन्द)
	कटिबद्ध	– तैयार, उद्धत
52.	कंगाल	– निर्धन
	कंकाल	– अस्थिपंजर
53.	खोआ	– दूध से बना पदार्थ
	खोया	– खोया हुआ, वह जो खो गया हो
54.	गज	– हाथी
	गज़	– एक नाप
55.	ग्रह	– नक्षत्र
	गृह	– घर
56.	गदा	– एक प्रकार का हथियार
	गधा	– एक पशु का नाम
57.	गुर	– तरीका, उपाय
	गुरु	– शिक्षक
58.	गेय	– गाने योग्य
	ज्ञेय	– जानने योग्य

59.	क्षति	– हानि
	क्षिति	– पृथ्वी
60.	क्षात्र	– क्षत्रिय धर्म
	छात्र	– विद्यार्थी
61.	चर्म	– चमड़ा
	चरम	– अन्तिम
62.	चपल	– चंचल
	चपला	– बिजली
63.	चरण	– पैर
	चारण	– प्रशंसा करने वाले भाट कवि
64.	चिर	– पुराना
	चीर	– वस्त्र
	चीरा	– काटना/काटा या फाड़ा
65.	छटा	– सुन्दरता
	छठा	– छठवाँ
66.	छत	– मकान का ऊपरी आवरण
	क्षत	– घायल
67.	जलज	– कमल
	जलद	– बादल
68.	दशा	– हालत, अवस्था
	दिशा	– तरफ
69.	दवा	– दवाई
	दबा	– दबाना, दबाओ, दबाया हुआ
70.	दारु	– लकड़ी
	दारू	– शराब
71.	दारा	– स्त्री
	द्वारा	– माध्यम
72.	दिन	– दिवस
	दीन	– गरीब
73.	द्रव	– तरल पदार्थ
	द्रव्य	– धन

74. धरा – पृथ्वी
धारा – प्रवाह
75. धनु – धनुष
धेनु – गाय
76. धान्य – एक अनाज का नाम
धन – अनाज
77. नग – पर्वत, नगीना
नाग – एक साँप विशेष
78. नहर – सिंचाई हेतु कृत्रिम जल-प्रवाह
नाहर – सिंह
79. नत – झुका हुआ
नद – बड़ी नदी
80. नशा – मादक पदार्थों का सेवन
निशा – रात्रि
81. नगर – शहर
नागर – चतुर
82. नम्र – विनम्र
नर्म – मुलायम
83. नियत – निश्चित
नीयत – इच्छा, मन का लक्ष्य
नियति – भाग्य
84. निर्माण – बनाना, रचना
निर्वाण – मोक्ष
85. निधन – मृत्यु
निर्धन – गरीब
86. निहत – मरा हुआ
निहित – छिपा हुआ
87. नीर – जल
नीड़ – घोंसला
88. नीरद – बादल
नीरज – कमल

89.	नेक	– भला
	नेग	– दस्तूर (प्रथा)
90.	परुष	– कठोर
	पुरुष	– आदमी
91.	पथ	– मार्ग
	पथ्य	– परहेज
92.	पका	– पक्का, पका हुआ
	पक्का	– मजबूत
93.	पड़ना	– लेटना
	पढ़ना	– अध्ययन की क्रिया
94.	परिमाण	– मात्रा
	परिणाम	– नतीजा
95.	पद्य	– कविता
	पद्म	– कमल
96.	परिच्छद	– पोशाक
	परिच्छेद	– अध्याय
97.	परिधान	– वस्त्र
	प्रधान	– प्रमुख
98.	पण	– प्रण (वेतन, व्यापार)
	पाणि	– हाथ
99.	परिणय	– विवाह
	प्रणय	– प्रेम
100.	परवाह	– चिन्ता
	प्रवाह	– बहाव
101.	पर्ण	– पत्ता
	प्रण	– प्रतिज्ञा
102.	पाणि	– हाथ
	पानी	– जल
103.	प्रसाद	– कृपा
	प्रासाद	– भवन/महल
104.	प्रमाण	– सबूत

	प्रणाम	–	नमन, नमस्कार
105.	प्रलाप	–	ऊल-जलूल बकना
	विलाप	–	रोना
106.	पंक	–	कीचड़
	पंगु	–	लँगड़ा
107.	प्रहर	–	समय का भाग
	प्रहार	–	चोट, आघात
108.	बदन	–	शरीर
	वदन	–	मुख
109.	बहु	–	बहुत
	बहू	–	बधू
110.	बलि	–	भेंट, बलिदान, न्योछावर
	बली	–	बलवान
111.	बात	–	कथन
	वात	–	हवा
112.	बाड़	–	रोक
	बाढ़	–	जल की अधिकता
113.	भव	–	संसार
	भव्य	–	सुन्दर
114.	भट	–	योद्धा
	भाट	–	चारण
115.	भुवन	–	लोक
	भवन	–	मकान
116.	भारती	–	सरस्वती
	भारतीय	–	भारत का
117.	मूल	–	जड़
	मूल्य	–	कीमत
118.	मन्दर	–	पर्वत
	मन्दिर	–	देवालय
119.	मेल	–	सन्धि
	मैल	–	गन्दगी

120.	रक्त	– खून
	रिक्त	– खाली
121.	रति	– प्रेम
	रीति	– ढंग
122.	रंग	– वर्ण
	रंक	– निर्धन
123.	राज	– शासन
	राज़	– गुप्त बात
124.	लगन	– उत्साह
	लग्न	– मुहूर्त
125.	व्याध	– शिकारी
	व्याधि	– रोग
126.	वय	– अवस्था
	व्यय	– खर्चा
127.	वसन	– वस्त्र
	व्यसन	– बुरी आदत
128.	वमन	– उल्टी
	वामन	– बौना
129.	व्रण	– घाव
	वर्ण	– रंग
130.	वृत्त	– चरित्र
	वित्त	– धन
131.	शर	– बाण
	सर	– सरोवर
132.	शची	– इन्द्र की पत्नी
	शुचि	– पवित्र, स्वच्छ
133.	शलभ	– पतंगा
	सुलभ	– आसानी से प्राप्त
134.	शव	– लाश
	सब	– सम्पूर्ण
135.	श्वेत	– सफेद

	स्वेद	–	पसीना
136.	श्रमण	–	बौद्ध भिक्षु
	श्रवण	–	सुनना, कान
137.	शंकर	–	शिव
	संकर	–	मिश्रित
138.	शाम	–	संध्या
	श्याम	–	काला
139.	श्रान्त	–	खिन्न
	श्रान्ति	–	थकान
140.	शुक्ल	–	सफेद
	शुल्क	–	फीस
141.	शोक	–	दुःख
	शौक	–	चाव
142.	सजा	–	आकर्षक तरीके से रखा हुआ
	सज़ा	–	दण्ड
143.	समान	–	बराबर
	सामान	–	वस्तुएँ
	सम्मान	–	आदर
144.	सकल	–	समस्त
	शकल	–	थोड़ा-सा
145.	सबल	–	बलशाली
	शबल	–	चितकबरा
146.	सिवा	–	अतिरिक्त
	शिवा	–	पार्वती, गीदड़ी
147.	सुरमा	–	आँखों में डालने वाला पदार्थ
	सूरमा	–	योद्धा
148.	सूर	–	सूर्य
	शूर	–	वीर, पराक्रमी
149.	सुधि	–	याद, स्मृति
	सुध	–	चेतना
150.	सुत	–	पुत्र
	सूत	–	धागा

151. स्वजन – बन्धु
 श्वजन – कुत्ता
152. स्वर्ण – सोना
 सवर्ण – उच्च जाति
153. हरण – चुराना
 हिरण – मृग
154. हरि – विष्णु
 हरी – हरे रंग का
155. हाल – दशा
 हॉल – बड़ा कमरा

बोध प्रश्न - 2

3. नीचे खण्ड 'क' में कुछ शब्द दिये गये हैं तथा खण्ड 'ख' में उनके अर्थ व्यतिक्रम रूप में दिये गये हैं। शब्दों एवम् उनके अर्थों को सुमेलित कीजिए—

खण्ड 'क'	खण्ड 'ख'
प्रारम्भ	नतीजा
भित्ति	नौका
प्रारब्ध	भीत
भीत	भाग्य
तरणी	डरा हुआ
तरुणी	आरम्भ
परिणाम	मात्रा
परिमाण	युवती

4. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
 अनल, अनिल, अपेक्षा, उपेक्षा, ग्रह, गृह, प्रसाद, प्रासाद।
5. निम्नलिखित शब्दों के श्रुतिसम शब्द लिखिए—
 अंश, अशक्त, अयश, कोष, खोया, गेय, परिमाण, प्रवाह।
6. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए—
 अर्क, अम्बु, आदि, आय, गेय, छात्र, जलद, नाहर, पंक, मूल।

21.5 अनेकार्थी शब्द का तात्पर्य

अनेकार्थी शब्द का तात्पर्य है अनेक अर्थों वाले शब्द। दूसरे शब्दों में 'वे शब्द जिनके अनेक अर्थ होते हैं, अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित दोहे पर ध्यान दीजिए—

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सूना।
पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष चून।।

उपर्युक्त दोहे में मोती के पक्ष में पानी का अर्थ है - स्वाति नक्षत्र की जल-बूँद, मनुष्य के पक्ष में पानी का अर्थ है इज्जत, सम्मान या चरित्र तथा चूने के पक्ष में पानी का अर्थ है साधारण जल। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'पानी' शब्द अनेकार्थी है।

अनेकार्थी शब्द काव्य को अलङ्कारमय कर देते हैं। इनसे काव्य के लालित्य की वृद्धि हो जाती है। श्लेष एवं यमक अलंकारों का आधार ये अनेकार्थी शब्द ही हैं। ध्यान रहे कि किसी शब्द के विविध अर्थों का ज्ञान शब्द के प्रयोग से होता है।

बोध प्रश्न - 3

7. अनेकार्थी शब्द क्या होते हैं? स्पष्ट कीजिए।
8. श्लेष एवं यमक अलंकारों में चमत्कारों का आधार क्या है?

21.6 'अनेकार्थी शब्दों' के उदाहरण

- | | | |
|-----|--------|--------------------------------------|
| 1. | अम्बर | आकाश, वस्त्र |
| 2. | अर्क | सूर्य, आक, रस, इन्द्र |
| 3. | अंक | गोद, संख्या, अध्याय |
| 4. | अक्षर | वर्ण, ब्रह्म, अविनाशी, आत्मा |
| 5. | अलि | भौरा, सखी, कोयल, बिच्छू, मदिरा |
| 6. | अर्थ | धन, अभिप्राय, व्याख्या |
| 7. | अमृत | घी, सुधा, पारा |
| 8. | अक्ष | आँख, सर्प, धुरी |
| 9. | अनन्त | शेषनाग, आकाश, विष्णु, लक्ष्मण |
| 10. | अरुण | लाल, सूर्य, सूर्य का सारथी |
| 11. | अश्म | पत्थर, बादल, पर्वत |
| 12. | आदित्य | इन्द्र, सूर्य, देवता |
| 13. | अज | बकरा, ब्रह्मा, दशरथ के पिता |
| 14. | अहि | सर्प, सूर्य, राहु, पृथ्वी, ठग |
| 15. | आनन्द | ब्रह्म, प्रसन्नता, गौतम का शिष्य |
| 16. | इन्दु | चन्द्रमा, कपूर |
| 17. | उत्तर | जवाब, एक दिशा |
| 18. | आम | एक फल, मामूली, साधारण |
| 19. | उत्तम | श्रेष्ठ, विष्णु, ध्रुव का सौतेला भाई |

20.	उपल	ओला, पत्थर
21.	कच	केश, बृहस्पति का पुत्र
22.	कनक	सोना, धतूरा, पलाश
23.	कपि	बन्दर, हाथी, सूर्य
24.	कर	हाथ, किरण, टैक्स, सूँड
25.	कर्ण	कान, कुन्ती का एक पुत्र
26.	काँटा	सेफ्टीपिन, छुरी-काँटा, गुलाब का काटा, कंटक
27.	काल	समय, मृत्यु
28.	कुंजर	हाथी, पीपल
29.	कोट	किला, पहनने का एक वस्त्र
30.	कोटि	धनुष का सिरा, करोड़
31.	कुमार	अविवाहित, स्कन्द, लड़का, तोता
32.	कुल	सम्पूर्ण, वंश
33.	कटाक्ष	व्यंग्य, तिरछी चितवन
34.	कुश	दर्भ, राम का पुत्र
35.	कुशल	चतुर, खैरियत, शिव
36.	केतु	एक क्रूर ग्रह का नाम, पताका
37.	कोक	चकवा, कोयल, मेढक, विष्णु
38.	खर	गधा, तीव्र, अशुभ, बगुला
39.	खेचरी	दुर्गा, अप्सरा
40.	खग	पक्षी, बाण, सूर्य, वायु, बादल
41.	गण	वर्ग, संघ, मनुष्य
42.	गुरु	शिक्षक, बृहस्पति, भारी
43.	गो	गाय, इन्द्रिय, किरण, सरस्वती, धरती, आकाश
44.	गोपति	विष्णु, ग्वाला, साँड़, राजा, कृष्ण, शिव
45.	गौतमी	अहल्या, गोदावरी, दुर्गा, द्रोणाचार्य की पत्नी
46.	गरल	ज़हर, घास का पूला
47.	गिरिधर	श्रीकृष्ण, हनुमान
48.	तनया	पुत्री, लड़की
49.	फल	नतीजा, मेवा, भाले की नोंक
50.	मधु	शहद, मदिरा, बसंत

बोध प्रश्न - 4

9. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थ लिखिए।
अम्बर, अज, कनक, कपि, कुमार, खग।
10. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और उस पर दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—
एक अलि ने दूसरी अलि से कहा कि इस फूल की डाल पर जो अलि बैठा है वह गुनगुनाता है। दूसरी अलि ने प्रथम अलि से कहा कि इस पेड़ की डाल पर जो अलि बैठा है वह कू-कू करता है।
- (क) इस अनुच्छेद में अलि शब्द के किन-किन अर्थों का प्रयोग किया गया है?
- (ख) अनुच्छेद में किस कीट को 'गुनगुनाता है' कहा गया है?
- (ग) कौन पक्षी कू-कू करता है?

21.7 सारांश

भाषा की शुद्धता के लिए शब्दों का ज्ञान आवश्यक है। कुछ शब्दों के उच्चारण में इतना कम अन्तर होता है कि जरा सी लापरवाही हुई तो हम कुछ का कुछ बोल देंगे। इसी गलती से उनके अर्थ बदल जायेंगे। उदाहरण के लिए हमने सकृत् को शकृत् कह दिया तो 'एक बार अर्थ' न होकर 'विष्टा' या 'मैला' का अर्थ द्योतित हो जायेगा। इसी प्रकार गज (हाथी) और गज (एक माप) का उच्चारण एक जैसे कर दें तो अभीष्ट अर्थ को नहीं बता सकेंगे। अतः श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्दों से तात्पर्य उन शब्दों से है जो सुनने में बहुत कम अन्तर लिए होते हैं। किन्तु उनके अर्थ भिन्न-भिन्न होते हैं। 'श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द' को 'समोच्चारित भिन्नार्थक शब्द' एवं 'समरूपी भिन्नार्थक शब्द' भी कहा जाता है।

जिन शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं, उन्हें अनेकार्थी शब्द कहा जाता है। लेकिन यह ध्यान रखना चाहिए कि किसी शब्द के अनेक अर्थों का ज्ञान शब्द के प्रयोग के द्वारा होता है। अनेकार्थी शब्द भाषा की सुन्दरता में वृद्धि करते हैं एवम् उसे आलंकारिक बना देते हैं।

21.8 शब्दावली

अध्येता	—	अध्ययन करने वाला, पढ़ने वाला छात्र।
श्रुतिसम	—	सुनने में समान, सुनने में कम अन्तर होने के कारण समान होने का आभास हो किन्तु समान न हों।
भिन्नार्थक	—	भिन्न अर्थ वाले।
अवगत	—	ज्ञान से युक्त।
भिन्न	—	अलग।
अनर्थ	—	अन + अर्थ, विपरीत या अलग अर्थ (हो जाना)।
युक्त	—	सहित।

संदेह	–	शंका।
समोच्चारित	–	सम + उच्चारित (लगभग) समान रूप में उच्चारित।
समरूपी	–	समान रूप वाले/वाला, (लगभग)।
अनेकार्थी	–	(अनेक+अर्थी) अनेक अर्थों वाला/अनेक अर्थों वाले।
मानुष	–	मनुष्य।
क्षेप	–	एक अलंकार का नाम। काव्य में कोई शब्द एक बार प्रयुक्त होकर अनेक अर्थों को द्योतित करता है तो वहाँ क्षेप अलंकार होता है।
यमक	–	एक अलंकार का नाम। कोई शब्द अनेक बार प्रयुक्त होकर भिन्न-भिन्न अर्थ द्योतित करे तो यमक अलंकार होता है।

21.9 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. राष्ट्री भाग-4, प्रकाशक- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।
2. हिन्दी शब्द - अर्थ-प्रयोग, लेखक एवं संपादक – डॉ. हरदेव बाहरी।
3. सामाय हिन्दी, लेखक- डॉ. शिवमूर्ति शर्मा।
4. कबीर ग्रन्थावली (कबीर)।
5. दोहावली (तुलसीदास रचित)।

21.10 उपयोगी पुस्तकें

हिन्दी:- शब्द-अर्थ-प्रयोग; लेखक-डॉ. हरदेव बाहरी, अभिव्यक्ति प्रकाशन, गोविन्दपुर कालोनी, इलाहाबाद-211004; संस्करण: 2015।

21.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द का तात्पर्य उन शब्दों से है जो सुनने में बहुत कम अन्तर वाले होते हैं किन्तु उनका अर्थ सर्वथा भिन्न होता है।
2. वर्तनीसम- वर्तनी में समान
ध्वनिसम – ध्वनि में समान
3.

खण्ड 'क'	खण्ड 'ख'
प्रारम्भ	आरम्भ
भित्ति	भीत
प्रारब्ध	भाग्य
भीत	डरा हुआ
तरणी	नौका

तरुणी	युवती
परिणाम	मात्रा
परिमाण	नतीजा

4. शब्दों के वाक्य प्रयोग निम्न हैं—

अनल	—	अग्नि का एक नाम अनल भी है।
अनिल	—	अध्यापक ने अनिल से कहा- अनिल शब्द का अर्थ क्या है? अनिल ने कहा- 'वायु'।
अपेक्षा	—	मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप इस काम को सही ढंग से कर लेंगे।
उपेक्षा	—	रावण ने विभीषण की उपेक्षा की तो वह राम की शरण में चला गया।
ग्रह	—	बृहस्पति, सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रह है।
गृह	—	गृह की आवश्यकता प्रत्येक प्राणी को होती है।
प्रसाद	—	हनुमान ने राम से कहा कि आप के ही प्रसाद से मैं पर्वत से संजीवनी ला पाया हूँ।
प्रासाद	—	सन्तोषी व्यक्ति झोपड़ी में भी सुखपूर्वक रह लेते हैं, किन्तु सन्तोष न करने वाले को 'प्रासाद' में भी सुख नहीं प्राप्त होता।

5. शब्द - श्रुतिसम शब्द

अंश	—	अंस
अशक्त	—	आसक्त
अयश	—	अयस
कोष	—	कोश
खोया	—	खोआ
गेय	—	ज्ञेय
परिमाण	—	परिणाम
प्रवाह	—	परवाह

6. शब्द - अर्थ

अर्क	—	सूर्य
अम्बु	—	पानी
आदि	—	प्रारम्भ
आय	—	आमदनी
गेय	—	गाने योग्य

- | | | |
|-------|---|------------|
| छात्र | — | विद्यार्थी |
| जलद | — | बादल |
| नाहर | — | सिंह |
| पंक | — | कीचड़ |
| मूल | — | जड़ |
7. जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं उन्हें अनेकार्थी शब्द कहते हैं। जैसे-अम्बर का अर्थ है 'आकाश' और 'वस्त्र'।
 8. श्लेष एवं यमक अलंकारों में चमत्कारों का आधार अनेकार्थी शब्द होते हैं।
 9. अम्बर - आकाश, वस्त्र

अज	—	ब्रह्म, बकरा
कनक	—	सोना, धतूरा
कपि	—	बन्दर, हाथी
कुमार	—	अविवाहित, स्कन्द
खग	—	पक्षी, बाण
 10. (क) इस अनुच्छेद में अलि शब्द के 'सखी', 'भौंरा' और 'कोयल' अर्थों का प्रयोग किया गया है।
 (ख) अनुच्छेद में भौंरे को 'गुनगुनाता है' कहा गया है?
 (ग) कोयल कू-कू करती है।

21.12 अभ्यास प्रश्न

1. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द क्या हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
2. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द सुनने में एकदम समान होते हैं या लगभग समान होते हैं?
3. हिन्दी की विभिन्न पुस्तकों से छाँटकर ऐसे दस वाक्यों को लिखिए जिनमें निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग हुआ हो - आधी, आँधी, आयत, आयात, परिणाम, परिमाण, कर्म, क्रम, गदा, गद्दा।
4. गज और गज़ शब्द में क्या अन्तर है।
5. निम्नलिखित के श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द लिखिए—
क्षत, पण, दारु, वित्त, सर, सूर।
6. किसी शब्द के अनेक अर्थों का ज्ञान किस प्रकार होता है?
7. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो अर्थों में वाक्य प्रयोग कीजिए:
 (क) अमृत (ख) उत्तर (ग) कुल (घ) कुशल (ङ) केतु।

